राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
M.A. Hindi
Structure 3 (Level 6.5) : Research
Semester I (For One Year PG) / Semester III (For Two Year PG)

No.	Paper Type	Paper Name	Page No.
1	DSC 1	1. शोध : क्षेत्र, विषय और संभावनाएं	
2	Pool of DSE (For I/III Sem)	1. आदिकालीन साहित्य : शोध की संभावनाएं और समस्याएं	
		2. भक्तिकालीन साहित्य : शोध की संभावनाएं और समस्याएं	
		3. रीतिकालीन साहित्य : शोध की संभावनाएं और समस्याएं	
		4. आधुनिक कविता : शोध की संभावनाएं और समस्याएं	
		5. काव्यशास्त्र : शोध की संभावनाएं और समस्याएं	
3	Research Methodology	1. शोध : प्रक्रिया, प्रविधि एवं दिशाएं	

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
एम. ए. हिंदी
Structure 3 (Level 6.5): Research
सेमेस्टर I (For One Year PG)
सेमेस्टर III (For Two Year PG)
DSC 1 – शोध: क्षेत्र, विषय और संभावनाएं

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSC 1 **शोध : क्षेत्र, विषय और संभावनाएं**	4	3	1	0	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives):

- विद्यार्थियों को हिंदी के विभिन्न शोध क्षेत्रों से परिचित कराना ।
- हिंदी भाषा एवं साहित्य से संबंधित विभिन्न समस्या मूलक शोध विषयों की जानकारी देना ।
- हिंदी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में शोध की संभावनाओं से अवगत कराना ।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

- विद्यार्थी हिंदी के विभिन्न शोध क्षेत्रों से परिचित होंगे ।
- हिंदी भाषा एवं साहित्य से संबंधित विभिन्न समस्या मूलक शोध विषयों की जानकारी प्राप्त होगी।
- हिंदी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में शोध की संभावनाओं से अवगत होंगे।

इकाई 1 : मध्यकालीन हिंदी साहित्य (8वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक) (13 घंटे)

- आदिकालीन साहित्य: शोध की संभावनाएं और समस्याएं

- भक्तिकालीन साहित्य: शोध की संभावनाएं और समस्याएं
- रीतिकालीन साहित्य: शोध की संभावनाएं और समस्याएं

इकाई 2 : आधुनिक हिंदी साहित्य (कविता, नाटक-रंगमंच, कथा साहित्य एवं अन्य गद्य विधाएं) (12 घंटे)

- कविता: शोध की संभावनाएं और समस्याएं
- नाटक एवं रंगमंच: शोध की संभावनाएं और समस्याएं
- कथा साहित्य : शोध की संभावनाएं और समस्याएं
- अन्य गद्य विधाएं : शोध की संभावनाएं और समस्याएं

इकाई 3 : प्रमुख शोध दृष्टियां (10 घंटे)

- शास्त्रीय दृष्टि
- मनोविश्लेषणवादी दृष्टि
- सांस्कृतिक अध्ययन
- समाजशास्त्रीय दृष्टि
- मार्क्सवादी दृष्टि

इकाई 4 : हिंदी साहित्य में शोध के नवीन क्षेत्र (10 घंटे)

- स्त्री विमर्श और हिंदी साहित्य
- दलित विमर्श और हिंदी साहित्य, जनजातीय विमर्श, विकलांग विमर्श और हिंदी साहित्य
- भाषा विज्ञान, अनुवाद
- जनसंचार माध्यम के विविध रूप और हिंदी साहित्य

व्यावहारिक कार्य :

- हिंदी भाषा एवं साहित्य में संभावित शोध विषयों की सूची तैयार करना ।
- हिंदी भाषा एवं साहित्य विषयक शोध में सहायक सॉफ्टवेयर पर रिपोर्ट लेखन ।
- सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार हेतु प्रश्नावली का निर्माण ।
- साहित्य समीक्षा ।
- शिक्षक द्वारा दिया गया परियोजना अथवा अन्य कार्य ।

सहायक ग्रंथ:

- शुक्ल, रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, उत्तर प्रदेश ।
- द्विवेदी, हजारी प्रसाद; हिंदी साहित्य का आदिकाल, राजकमल प्रकाशन, संस्करण, दिल्ली
- सिंह, नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण.2008 उत्तर प्रदेश ।
- तिवारी, रामचंद्र; हिंदी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर, संस्करण.2016 उत्तर प्रदेश।

- जैन, नेमिचंद; रंगदर्शन, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण.2015, नई दिल्ली ।
- शर्मा, देवेंद्रनाथ; भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण.2014, नई दिल्ली ।
- शर्मा, राम विलास; भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
- सिंह, सुधा, जनमाध्यम सैद्धांतिकी मॉडल और विचारधारा, एकैडमिक पब्लिकेशन, 2021, दिल्ली ।
- चतुर्वेदी, जगदीश्वर; दलित साहित्य और विचारधारा, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2021 दिल्ली ।
- विद्यार्थी, ललित प्रसाद; भारतीय आदिवासी, उनकी संस्कृति और सामाजिक पृष्ठभूमि,
- रविकांत; हिंदी सिनेमा का साहित्यिक परिदृश्य, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली ।
- मुकुल, मंजु; मीडिया में अनुवाद का संप्रेषणधर्मी नवीन मॉडल, हंस प्रकाशन, दिल्ली ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एम. ए. हिंदी

Structure 3 (Level 6.5) : Research

Semester I (For One Year PG)

Semester III (For Two Year PG)

DSE - **आदिकालीन साहित्य: शोध की संभावनाएं एवं समस्याएं**

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSE **आदिकालीन साहित्य : शोध की संभावनाएं एवं समस्याएं**	4	3	1	0	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (**Course Objectives**)

- विद्यार्थियों को आदिकालीन हिंदी साहित्य के विभिन्न शोध क्षेत्रों से परिचित कराना।
- आदिकालीन साहित्य संबंधी विभिन्न समस्यामूलक शोध विषयों की जानकारी देना।
- आदिकालीन साहित्य में शोध की संभावनाओं से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes)

- विद्यार्थियों में आदिकालीन साहित्य की काल-निर्धारक शोध दृष्टि विकसित हो सकेगी।
- आदिकालीन साहित्य संबंधी विभिन्न समस्यामूलक शोध विषयों से अवगत हो सकेंगे।
- आदिकालीन साहित्य के विविध क्षेत्रों एवं विषय संबंधी शोध की संभावनाओं का बोध होगा।

इकाई 1 : आदिकालीन हिंदी साहित्य : काल विभाजन और नामकरण (10 घंटे)

- आदिकालीन हिंदी साहित्य का आरंभ
- काल निर्धारण का ऐतिहासिक एवं भाषिक आधार
- आदिकाल का नामकरण संबंधी विविध दृष्टिकोण
- आदिकाल एवं भक्तिकाल : हिंदी साहित्य का संक्रांति स्थल

इकाई 2 : आदिकालीन साहित्य के पाठ-अनुसंधान की समस्याएं (13 घंटे)

- पाठ अनुसंधान के प्राथमिक स्रोत

- पाठ के विविध संस्करणों की उपलब्धता एवं प्रामाणिकता का प्रश्न
- आदिकालीन भाषा काव्य और अर्थ अन्वेषण
- उपलब्ध पाठों के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ

इकाई 3 : आदिकालीन रासक एवं रासो काव्य : शोध की संभावनाएं (11 घंटे)

- रास काव्य की परंपरा
- रासक काव्य की सौन्दर्य चेतना
- रासो काव्य का स्वरूप एवं अर्थ अन्वेषण
- रासो काव्य की प्रामाणिकता का प्रश्न एवं लोक मान्यताएं

इकाई 4 : आदिकालीन हिंदी साहित्य की भाषा एवं विविध काव्यरूप (11 घंटे)

- अपभ्रंश और हिंदी का अंतःसंबंध
- अपभ्रंश की साहित्यिक परंपरा : सिद्ध एवं नाथ साहित्य
- अपभ्रंश के विविध काव्यरूप और प्रारंभिक हिंदी
- विद्यापति, अमीर खुसरो एवं अन्य रचनाकारों की भाषा एवं काव्यरूप

सहायक ग्रंथ :

1. शुक्ल, रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा,2025, वाराणसी
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. हिंदी साहित्य का आदिकाल,वाणी प्रकाशन, 2021
3. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, संस्करण.2017 दिल्ली
4. गुलेरी, चंद्रधर शर्मा. पुरानी हिंदी, नागरी प्रचारिणी सभा, संस्करण.1960 वाराणसी
5. त्रिपाठी, राममूर्ति. आदिकालीन हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक पीठिका, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादेमी, संस्करण.1973 भोपाल
6. सिंह, नामवर. हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण.1952 प्रयागराज
7. राय, अनिल. आदिकालीन हिंदी साहित्य : अध्ययन की दिशाएं, वाणी प्रकाशन, संस्करण.2024 दिल्ली
8. कोछड़, हरिवंश. अपभ्रंश साहित्य, आत्माराम एण्ड संस, संस्करण.1965, दिल्ली

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एम. ए. (हिंदी)

Structure 3 (Level 6.5) : Research

Semester I (For One Year PG)

Semester III (For Two Year PG)

DSE – भक्तिकालीन साहित्य: शोध की संभावनाएं एवं समस्याएं

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSE **भक्तिकालीन साहित्य: शोध की संभावनाएं एवं समस्याएं**	4	3	1	0	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives):

- विद्यार्थियों को भक्तिकाल की सामाजिक,धार्मिक,सांस्कृतिक और भाषा-आधारित पृष्ठभूमि को समझाना ।
- भक्तिकालीन काव्य और साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियां,कवि तथा संप्रदायों का ज्ञान विकसित करना ।
- भक्तिकालीन साहित्य के आलोचनात्मक विमर्श,समकालीन प्रासंगिकता और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों की पहचान करना ।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

- विद्यार्थी भक्तिकालीन साहित्य के सामाजिक,धार्मिक,भाषाई और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को समझने में सक्षम होंगे ।
- भक्तिकाल पर विभिन्न समकालीन आलोचनात्मक दृष्टिकोण (जैसे नारीवादी,दलित,उत्तर-औपनिवेशिक) से विचार कर सकते हैं ।
- भक्ति साहित्य के प्रति गहरी समझ, सांस्कृतिक सहिष्णुता, मानवता और समाज सुधार के प्रति जागरूकता विकसित होगी ।

इकाई 1 : भक्तिकाल का उदय

- भक्ति कविता और भारतबोध
- राजनीतिक हस्तक्षेप, विदेशी आक्रमण और धार्मिक दृष्टि
- अवतरवाद, लीला, लोक और भारतीय समाज
- भक्तों की यात्राएं, भाषा संस्कार और भारतभाव

इकाई 2 : भक्ति साहित्य : दार्शनिक पीठिका

- अद्वैत, विशिष्टाद्वैत
- द्वैत, द्वैताद्वैत
- शुद्धाद्वैत, सूफ़ी
- भक्तिकाल की धाराएं

इकाई 3 : भक्तिकाल का आदर्शलोक

- संत काव्यधारा
- सगुण काव्यधारा
- निर्गुण काव्यधारा
- सूफ़ी काव्यधारा

इकाई 4 :भक्तिकाल का सातत्य : शिल्प और उत्सव का आरोहण

- गार्हस्थ्य बोध की प्रेम कविताएं
- काव्यशास्त्रीय पदचिह्न : शिल्प का सौंदर्य
- निर्गुण-सगुण अभिव्यक्ति का अभिव्यंजना कौशल
- संस्कृति का उत्सव बोध : रस का लोकतंत्र

व्यावहारिक कार्य:

- भक्ति काल के उदय की विभिन्न मान्यताओं पर समूह चर्चा
- भक्ति काल के दार्शनिक पक्षों को साथ रखकर भक्त कवियों की समीक्षा करना
- वर्तमान में भक्त कवियों के स्वप्नलोक की प्रासंगिकता की दृष्टि से लेखन
- शिक्षक द्वारा दिया गया परियोजना कार्य अथवा अन्य कार्य

सहायक ग्रंथ :

1. शुक्ल, रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1929.
2. ताराचंद, भारतीय संस्कृति में इस्लाम का प्रभाव, ग्रंथ शिल्पी, इंडिया
3. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. हिंदी साहित्य की भूमिका. हिंदी–ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई, 1940.
4. शर्मा, कृष्ण गोपाल, भारत की संत परंपरा और सामाजिक समरसता, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2011
5. शर्मा, रामविलास. भारतीय सौंदर्यबोध और तुलसीदास, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2001.
6. मिश्र, विश्वनाथ प्रसाद. हिंदी साहित्य का अतीत, भाग 1-2, वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी, 1959-1960.
7. सिंह, सुधा (सं.), मध्यकालीन साहित्य विमर्श, ई-बुक, नॉटनल डॉट कॉम
8. पचौरी, सुधीश, तीसरी परंपरा की खोज, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2019

9. ., आचार्य (डॉ.) चन्दन. ... हिंदुवानी हों रहूँगी, भारतीय विद्या अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली, 2025

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
एम. ए. (हिंदी)
Structure 3 (Level 6.5) : Research
Semester I (For One Year PG)
Semester III (For Two Year PG)
DSE – रीतिकालीन साहित्य: शोध की सम्भावनाएँ एवं समस्याएँ

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSE **रीतिकालीन साहित्य: शोध की संभावनाएं एवं समस्याएँ**	4	3	1	0	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को रीतिकालीन साहित्य की साहित्यिक, सौन्दर्यशास्त्रीय और कला बोध की परम्परा से परिचित कराना.
- विद्यार्थियों को रीतिकालीन साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियों, साहित्यायिक तत्वों और उसके सामाजिक संदर्भों की जानकारी देना.
- रीतिकालीन साहित्य के माध्यम से भारतीय सौन्दर्यबोध की मान्यताओं, काव्यशास्त्रीय मानदंडों और भाषाई उपलब्धियों के क्षेत्र में शोध की नवीन संभानाओं से परिचित कराना.

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

- विद्यार्थी रीतिकालीन साहित्य के सौन्दर्य और उसमें अंतर्निहित कलात्मक अभिरुचि से परिचित हो सकेंगे.
- हिन्दी का रीतिकालीन साहित्य की काव्यात्मक, काव्यशास्त्रीय और व्याकरणिक दृष्टि से अध्ययन-अध्यापन एवं शोध की नवीन दृष्टियों और दिशाओं की जानकारी प्राप्त करेंगे.
- इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी हिंदी के रीतिकालीन साहित्य की संरचना और ब्रज भाषा के अन्तर्सम्बन्धों जानकारी प्राप्त करने के साथ ही इस क्षेत्र में शोध एवं अनुसन्धान की समस्याओं को समझने और उनके तार्किक समाधान की दिशा में अग्रसर हो होंगे.

इकाई 1 : रीतिकालीन साहित्य : परम्परा, प्रेरणा और काव्यशास्त्र (13 घंटे)

- रीतिकालीन साहित्य और हिन्दी साहित्य का इतिहास, ऐतिहासिक सन्दर्भ, सामाजिक-सांस्कृतिक अवस्थिति, साहित्येहास की संरचना और रीतिकालीन साहित्यिक तत्वों का अध्ययन विश्लेषण, साहित्येहास में रीतिकाव्य के आंतरिक विभाजन (रीतिबद्ध, रीति सिद्ध और रीतिमुक्त) सम्बन्धी अध्यन की समस्याएँ, औचित्य और उक्त विभाजन सम्बन्धी वैकल्पिक एवं नवीन दृष्टिकोणों का शोध
- रीतिकालीन साहित्य और संस्कृत काव्यशास्त्र : रस, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, औचित्य, संस्कृत काव्यशास्त्र के साहित्यिक मानदंड और रीतिकालीन काव्य में नव्य तत्वों का शोध-विश्लेषण
- रीतिकालीन साहित्य और आचार्य परम्परा, आचार्यत्व की भंगिमा, लक्षण-ग्रन्थ एवं अन्य साहित्यिक कृतियों का शास्त्रीय, सैद्धातिक एवं व्यावहारिक अध्ययन एवं इसकी समकालीन साहित्यि के संरचना, कला पक्ष और भाव पक्ष के आधार पर उपादेयता की खोज और शोध-अध्ययन
- रीति काव्य , रीति तत्व, रस, छंद और अलंकार, काव्य निरूपण, नायिका भेद, शास्त्रीय विवेचन, प्रेम, भक्ति, श्रृंगार, नीति, रीति, वीर रस से सम्बन्धी प्रवृत्तियों का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन

इकाई 2 : रीतिकालीन साहित्य और भारतीय सौन्दर्यशास्त्र (1 1 घंटे)

- सौन्दर्यशास्त्र : अर्थ, अवधारणा और भारतीय एवं पाश्चत्य सौन्दर्यशास्त्र के मानदंडों के आलोक में रीतिकालीन साहित्य का अध्ययन.
- रीतिकालीन साहित्य में सौन्दर्यशास्त्रीय तत्त्व और कला सम्बन्धी समकालीन बहसों का तार्किक विश्लेषण और शोध.
- रीतिकालीन साहित्य और समकालीन कलाएँ : चित्रकला, स्थापत्यकला, मूर्तिकला और संगीत की आपसदारी तथा प्रेरणा और प्रभाव की अन्योन्याश्रारिता का शोध और अध्ययन.
- रीतिकालीन साहित्य : लक्षण ग्रन्थ, पद्य रचनाएँ, गद्य रचनाएँ और समकालीन उर्दू कविता के साथ सहसम्बन्धों की दिशा और दशा का विश्लेषण. रीतिकालीन साहित्य के प्रमुख एवं अल्पज्ञात ग्रन्थों का पाठालोचन, पाठकेन्द्रित अध्ययन और विश्लेषण.

इकाई 3 : रीतिकालीन साहित्य के मूल्यांकन की समस्याएँ और आलोचकीय कसौटियाँ (11 घंटे)

- आलोचना और रीतिकालीन साहित्य, रीतिकालीन साहित्य संदर्भित विभिन्न आलोचना-दृष्टियाँ, काव्य निरूपण, श्रृंगारपरक, भक्तिपरक, नीतिपरक, वीरपरक रीतिकालीन साहित्य सम्बन्धी आलोचना की समर्थ्य और सीमाओं का अध्ययन
- औपनिवेशिक साहित्यिक नैतिकता और रीतिकालीन साहित्य के मूल्यांकन की समस्याएँ और समाधान की नई दृष्टि, भारतीय चिन्तन परम्परा के साहित्यिक मूल्य और रीतिकालीन साहित्य
- दरबारी साहित्य, जन साहित्य, साहित्य की सामाजिक भूमिका जैसी आलोचकीय संरचनाएँ और रीतिकालीन साहित्य के मूल्यांकन सम्बन्धी तथ्य, तार्किकता और वास्तविकता का शोध अध्ययन
- रीतिकाव्य द्वारा अध्यात्मिक व्यंजना के बरक्स इहलौकिकता के कलात्मक सौन्दर्य के वैभव की प्रतिष्ठा, भौतिकता का आकर्षण के मूल्यांकन की सीमाओं का अध्ययन एवं तत्कालीन उर्दू-फारसी कविता की साझा सांस्कृतिक एवं भाषायी भूमि और भूमिका का अध्ययन-विश्लेषण

इकाई : 4 – रीतिकालीन साहित्य : शोध अध्ययन की नई संभावनाएँ (10 घंटे)

- मध्यकालीन काव्य शैलियाँ, लक्षण ग्रन्थ, प्रबंध ग्रन्थ, खंड काव्य, मुक्तक काव्य. कथानक रूढ़ियाँ, कवि समय और पारम्परिक काव्य प्रतिमानों के आलोक में रीतिकालीन साहित्य का अध्ययन.
- ब्रजभाषा का विकास, रीतिकालीन साहित्य, उर्दू और फारसी कविता और ब्रज भाषा में रचित रीतिकालीन साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन.
- रीतिकालीन साहित्य में चित्रित मध्यकाल का समाज, सामंतवादी परिदृश्य, कृषक, मजदूर, स्त्री-समाज और जीवन के वास्तविक तथ्यों की खोज, रीतिकालीन कवियों की व्यक्तिगत रुचि, लौकिक प्रेम का आधुनिक बोध के संदर्भ में शोध और विश्लेषण.
- भक्तिकाल के रीतिकाल में रूपांतरण की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिस्थितियों सम्बन्धी पारम्परिक मान्यताओं का मूल्यांकन, साहित्यिक परम्परा के रूप में आदिकालीन साहित्य से रीतिकालीन साहित्य की यात्रा के साझा साहित्यिक तत्वों का शोध और विश्लेषण.

संदर्भ ग्रन्थ :

1. शुक्ल, रामचन्द्र, रस मीमांसा, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2020
2. नगेन्द्र,डॉ., रीतिकाव्य की भूमिका, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, 2021
3. शुक्ल, रामदेव, साक्षात रसमूर्ति : आनन्दघन कृत 'कृपानंद', अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017
4. Santayana,George The Sense of Beauty, Anson Street Press, America, 2025
5. मिश्र, भगीरथ, हिन्दी रीति साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999
6. जैन, निर्मला, रस सिद्धांत और सौंदर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999
7. पाण्डेय. के.सी. कम्परेटिव एस्थेटिक्स, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1950
8. तिवारी, रामचन्द्र, रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2002
9. मेघ, रमेश कुंतल, मध्ययुगीन रस दर्शन और समकालीन सौन्दर्यबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
10. पचौरी, सुधीश. रीतिकाल सेक्सुअलिटी का समारोह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2017.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एम. ए. हिंदी

Structure 3 (Level 6.5) : Research

Semester I (For One Year PG)

Semester III (For Two Year PG)

DSE – आधुनिक हिंदी कविता : शोध की संभावनाएं और समस्याएं

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSE **आधुनिक हिंदी कविता : शोध की संभावनाएं और समस्याएं**	4	3	1	0	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives) :

- विद्यार्थियों को आधुनिक हिंदी कविता के शोध की संभावनाओं और दिशाओं की जानकारी देना।
- विद्यार्थियों में आधुनिक हिंदी कविता के विकास के ऐतिहासिक संदर्भों की समझ पैदा करना।
- विद्यार्थियों को आधुनिक हिंदी कविता में शोध की चुनौतियों से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

- विद्यार्थी आधुनिक हिंदी कविता की पृष्टभूमि, विकासक्रम और शोध के क्षेत्र को समझेंगे
- विद्यार्थी आधुनिक हिंदी कविता की शोध की संभावनाओं और चुनौतियों को जानेंगे।
- विद्यार्थी आधुनिक हिंदी कविता के प्रयोग किए जा रहे शोध के मानकों, पद्धतियों आदि से परिचित होंगे

इकाई 1 : आधुनिक हिंदी कविता की अवधारणा एवं ऐतिहासिक संदर्भ

- आधुनिक हिंदी कविता की पृष्ठभूमि
- आधुनिक हिंदी कविता की प्रवृत्ति
- राष्ट्रीय बोध, नवजागरण और स्वच्छंदतावाद

इकाई 2 : आधुनिक हिंदी कविता : शोध की संभावनाएं

- ऐतिहासिक विकास क्रम एवं प्रवृत्तिगत परिवर्तनों का विश्लेषण
- आधुनिकता के परिवेशगत अनुभव और पश्चिमी आधुनिकतावाद के अंतःसंबंधों का विश्लेषण
- आधुनिक हिंदी कविता में विश्व साहित्य के प्रभावों का अध्ययन

इकाई 3 : आधुनिक हिंदी कविता : शोध की समस्याएं

- केंद्रीय विषय की अस्पष्टता
- पाठ आधारित मूल्यांकन की चुनौती
- समकालीन कविता का काल निर्धारण एवं सीमांकन

इकाई 4 : आधुनिक हिंदी कविता : शोध की चुनौतियां

- शोध पद्धति और आलोचकीय मानक
- गद्यात्मक, प्रतीक-बिम्ब एवं काव्यशास्त्र
- विविध सामाजिक संदर्भ एवं विमर्शों के प्रवेश की सार्थकता

संदर्भ ग्रंथ :

1. **पाठक, अभिजीत. आधुनिकता, भूमंडलीकरण और अस्मिता, आकार प्रकाशन,** संस्करण.2013
2. **सिंह, नामवर आधुनिकता, साहित्य की प्रवृत्तियां, राजकमल प्रकाशन,** संस्करण.2025
3. **सिंह, नामवर, छायावाद, राजकमल प्रकाशन,** संस्करण.2024
4. **बाली, तारकनाथ. हिंदी साहित्य का आधुनिक इतिहास, प्रभात प्रकाशन,** संस्करण.2017
5. **नवल, नंद किशोर. हिन्दी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन,** संस्करण.2025
6. **मोहन, डॉ एन. समकालीन हिंदी कविता, राजपाल,** संस्करण.2022
7. **तिवारी, विश्वनाथ, प्रसाद. समकालीन हिंदी कविता, राजकमल प्रकाशन,** संस्करण.2010
8. **तिवारी, अजय. आधुनिकता पर पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन,** संस्करण.2024
9. **विमल, गंगा प्रसाद. आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता, नयी किताब प्रकाशन** संस्करण.2021
10. **नवल, नन्द किशोर. आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास, वाणी प्रकाशन,** संस्करण.2023

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एम. ए. हिंदी

Structure 3 (Level 6.5) : Research

Semester I (For One Year PG)

Semester III (For Two Year PG)

DSE – काव्यशास्त्र: शोध की संभावनाएँ एवं समस्याएँ

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSE **काव्यशास्त्र: शोध की संभावनाएँ एवं समस्याएँ**	4	3	1	0	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives):

- विद्यार्थियों में भारतीय काव्यशास्त्र और पश्चिमी साहित्य में समान रूप से विशिष्ट परंपरा कोपरखने की समझ विकसित करना।
- विद्यार्थियों को काव्य के रूप, भाषाऔर अर्थ को समझने की दिशा का बोध कराना।
- काव्य की रचनात्मक प्रक्रिया, शास्त्रीय सिद्धांतों और उसे समाज में मिलने वाली स्वीकृति की ज्ञान-विज्ञान सम्मत समझ बढ़ाना।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

- काव्यशास्त्र से विद्यार्थियों को साहित्य के शास्त्रीय और तात्त्विक रूप को समझने में सहायता मिलेगी और वे नई स्थापनाओं की खोज कर सकेंगे।
- भारतीय काव्यशास्त्र और पश्चिमी साहित्य में समान रूप से विशिष्ट परंपरा को परखने की समझ विकसित होगी।
- काव्यशास्त्र में शोध की संभावनाएं और समस्याएं दोनों एक विशिष्ट क्षेत्र को संपुष्ट करते हैं, जिससे शोध के क्षेत्र में और अधिक व्यापकता बढ़ेगी।

इकाई–1: **(10 घंटे)**

- काव्यशास्त्र के भारतीय और पश्चिमी दृष्टिकोणों का परिचयात्मक अध्ययन

- काव्य की अवधारणा और उसकी भूमिका का विभिन्न संस्कृतियों में विकास
- भारतीय काव्यशास्त्रीय सिद्धांतोंऔर पश्चिम के विचारकों के साहित्यिक सिद्धांतों के बीच तुलना
- काव्यशास्त्र में भाषाई और सांस्कृतिक अवरोध

इकाई –2: (11 घंटे)

- काव्यशास्त्र और साहित्यिक आलोचना
- काव्यशास्त्र के सिद्धांतों का समकालीन साहित्य और संस्कृति के संदर्भ में परीक्षण और विश्लेषण
- भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांतों में भिन्नताएँ और परिभाषाएँ
- प्रत्येक सिद्धांतों की अपनी व्याख्यायें और एक समग्र या सार्वभौमिक सिद्धांत विकसित होने कीं समस्याएँ

इकाई –3: (11 घंटे)

- भारतीय काव्यशास्त्र पर संस्कृत साहित्य के विभिन्न तत्व और अंग के स्वरूप
- संस्कृत काव्यशास्त्र के आचार्यों द्वारा दी गई परिभाषाओं और सिद्धांतोंकी काव्यप्रवृत्तियों के संदर्भ में नए अनुसन्धान
- समकालीन काव्यशास्त्र में पश्चिमी आलोचना पद्धतियोंऔर दृष्टिकोणों के बीच संतुलन और उनके बीच सामंजस्य
- भारतीय काव्यशास्त्र और पाश्चात्य आलोचना के विमर्श : संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद, स्त्री विमर्श

इकाई –4: (13 घंटे)

- काव्यशास्त्र और संस्कृति, काव्यशास्त्र की समाज में उपयोगिता
- काव्यशास्त्र और भाषा के उपयोग और उसके प्रभाव पर गहन शोध
- काव्यशास्त्र और आधुनिक साहित्य में शोधकर्ताओं को नए काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोणों और सिद्धांतों को विकसित करने की आवश्यकता
- काव्यशास्त्र का उद्देश्य : काव्य का सौंदर्यशास्त्र या रसात्मक अनुभव

सहायक ग्रंथ:

1. डॉ. नगेन्द्र - शोध और सिद्धांत, पब्लिकेशन हॉउस, दिल्ली
2. डॉ. विजयपाल सिंह, हिन्दी अनुसन्धान, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली
3. डॉ. शशिभूषण सिंघल - साहित्यिक शोध के आयाम, आर्य बुक डिपो, दिल्ली
4. डॉ. विनय मोहन शर्मा - शोध प्रविधि, नेशनल पब्लिकेशन हॉउस, दिल्ली
5. डॉ. मनमोहन सहगल - हिन्दी शोध तंत्र की रूपरेखा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
6. रवीन्द्र कुमार जैन - साहित्यिक अनुसन्धान के आयाम, नेशनल पब्लिकेशन हॉउस, दिल्ली
7. डॉ.एस.एन. गणेशन - अनुसन्धान प्रविधि सिद्धांत और प्रक्रिया, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. डॉ. ओमप्रकाश– अनुसन्धान की समस्याएँ, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली

9. डॉ. म.ह. राजुरकर - हिन्दी अनुसंधान स्वरूप और विकास,नेशनल पब्लिकेशन हॉउस, दिल्ली

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
M.A. (Hindi) 1st / 2nd Year
Structure 3 (Level 6.5) : Research
SemesterI (For One Year PG)
SemesterIII (For Two Year PG)
DSE – शोध : प्रविधि, प्रक्रिया एवं उपकरण

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSE **शोध : प्रविधि, प्रक्रिया एवं उपकरण**	4	3	1	—	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objectives):

- विद्यार्थियों को शोध के स्वरूप एवं अवधारणा से परिचित कराना ।
- शोध के प्रकार एवं प्रक्रिया से अवगत कराना ।
- शोधकार्य में कंप्यूटर के उपयोग की जानकारी के साथ शोध संहिता से परिचय प्राप्त करना ।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

- विद्यार्थी शोध के स्वरूप एवं अवधारणा से परिचित हो सकेंगे ।
- शोध के प्रकार एवं प्रक्रिया से अवगत होंगे ।
- शोधकार्य में कंप्यूटर के उपयोग की जानकारी के साथ शोध संहिता से परिचय प्राप्त करेंगे ।

इकाई –1:शोध का सैद्धांतिक पक्ष (11 घंटे)

- शोध और आलोचना
- शोध और इतिहास बोध

- शोध में तथ्य एवं सत्य
- शोध में तर्क, अनुमान, कल्पना आदि की भूमिका

इकाई–2 :शोध की पद्धतियां (11 घंटे)

- ऐतिहासिक, तुलनात्मक, विधेयवादी
- पाठानुसंधान, पाठालोचन, भाषा वैज्ञानिक
- सांस्कृतिक अध्ययन, समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक
- संरचनावादी, उत्तर- संरचनावादी

इकाई–3 :शोध की प्रक्रिया (13 घंटे)

- शोध कार्य हेतु विषय चयन, शोध समस्या का निर्धारण एवं शोध के उद्देश्य
- पूर्व उपलब्ध साहित्य की समीक्षा
- शोध सामग्री संकलन और उसकी विभिन्न पद्धतियां
- शोध प्रबंध की रूपरेखा निर्माण की पद्धतियां, अध्यायीकरण, प्रस्तावना एवं उपसंहार लेखन
- संदर्भ ग्रंथ सूची निर्माण, उद्धरण तथा संदर्भोल्लेख की पद्धतियां (MLA, APA, Chicago)
- शोध प्रबंध / शोधार्थी की भाषा-शैली

इकाई – 4 : शोध : कंप्यूटर नेटवर्क और संहिता (10 घंटे)

- शोध : कंप्यूटर प्रौद्योगिकी, ICT, AI एवं इंटरनेट सामग्री का प्रयोग
- ई-स्रोतों का परिचय, शोध कार्य में उनकी प्रासंगिकता, विभिन्न वेबसाईट, पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तकालय एवं ऑनलाइन आर्काइव का उपयोग एवं प्रयुक्ति
- सॉफ्टवेयर उपकरण :साहित्यिक चोरी सॉफ्टवेयर, जैसे – टर्निटिन, उरकुंड, ड्रिलबिट, क्यूटेक्स्ट, प्लेगस्कैन, आदि ।
- प्रकाशन संबंधी नैतिकता, अनैतिक व्यवहार एवं समस्याएं
- बौद्धिक ईमानदारी एवं शोध-निष्ठा, बौद्धिक संपदा संबंधी कानून

व्यावहारिक कार्य :

- शोध हेतु ई-सामग्री की वेबसाईट, ऑनलाइन आर्काइव, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों की सूची तैयार करना ।
- शोध में सहायक सॉफ्टवेयर पर रिपोर्ट लेखन ।
- सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार हेतु प्रश्नावली का निर्माण ।
- साहित्य समीक्षा ।
- शिक्षक द्वारा दिया गया परियोजना अथवा अन्य कार्य ।

सहायक ग्रंथ सूची :

1. सिन्हा एवं स्नातक, सावित्री एवं विजयेन्द्र.अनुसंधान की प्रक्रिया,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1960.
2. शर्मा, विनयमोहन.शोध प्रविधि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1973.
3. सिंह, सरनाम.शोध प्रक्रिया एवं विवरणिका, आत्माराम एंड संस, नई दिल्ली, 1964.
4. त्रिपाठी, विनायक.शोध प्रविधि *:* अवधारणा एवं तकनीक, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली,2020.
5. गणेशन, एस. एन..अनुसंधान प्रविधि *:* सिद्धांत और प्रक्रिया, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश,2021.
6. सिंहल, बैजनाथ; शोध *:* स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2023.
7. राजूरकर एवं बोरा, भ.ह., एवं राजमल (संपादक), हिंदी अनुसंधान का स्वरूप, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली,1978.
8. सूरती, डॉ. उर्वशी जे; अनुसंधान का व्यावहारिक स्वरूप, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई, महाराष्ट्र, 1973.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति **2020**

M.A. Hindi

Structure 3 (Level 6.5) : Research

Semester II (For One Year PG) / Semester IV (For Two Year PG)

No.	Paper Type	Paper Name	Page No.
1	Pool of DSE (For II/IV Sem)	1. नाटक और रंगमंच : शोध की संभावनाएं और समस्याएं	
		2. कहानी एवं उपन्यास : शोध की संभावनाएं और समस्याएं	
		3. सिद्धांत और आलोचना : शोध की संभावनाएं और समस्याएं	
		4. अस्मितामूलक विमर्श : शोध की संभावना और समस्याएं	
		5. स्त्री चिंतन और अनुसंधान	
		6. अनुवाद, जनसंचार एवं भाषा विज्ञान : शो की संभावनाएं और समस्याएं	
	Techniques of Research writing	1.शोध लेखन की तकनीक	

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एम. ए. (हिंदी)

Structure 3 (Level 6.5) : Research

Semester II (For One Year PG)

Semester IV (For Two Year PG)

DSE : नाटक और रंगमंच : शोध की संभावनाएं एवं समस्याएं

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSE हिंदी नाटक और रंगमंच : शोध की संभावनाएं एवं समस्याएं	4	3	1	0	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (**Course Objectives**):

- ➢ विद्यार्थियों को हिंदी नाटक और रंगमंच से संबंधित शोध के विभिन्न क्षेत्रों से परिचित कराना।
- ➢ हिंदी रंगमंच के अखिल भारतीय स्वरूप की समझ विकसित करना।
- ➢ हिंदी के मंचीय नाटकों के अनुभव को परस्पर संवाद द्वारा प्रकट करने में सक्षम होंगे।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम **(Course Learning Outcomes)**:

- ➢ विद्यार्थियों हिंदी नाटक और रंगमंच से संबंधित शोध के विभिन्न क्षेत्रों से परिचित होंगे।
- ➢ हिंदी रंगमंच के अखिल भारतीय स्वरूप की समझ विकसित होगी।
- ➢ हिंदी के मंचीय नाटकों के अनुभव को परस्पर संवाद द्वारा प्रकट करने में सक्षम होंगे।

इकाई **–1**: भक्ति संदर्भित रंगमंच / भक्ति रंगमंच (9 घंटे)

इकाई **–2**: लोकनाट्य भक्ति पद्धतियां (12 घंटे)

इकाई **–3**:रंगमंच का अखिल भारतीय स्वरूप (12 घंटे)

इकाई **–4**: प्रदर्शनकारी कलाएं और रंगमंच / हिंदी के मंचीय नाटकों का अनुभव संवाद / पुनर्पाठ / पुनर्अध्ययन (12 घंटे)

सहायकग्रंथ**:**

1. जैन,नेमिचंद. रंगदर्शन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, दूसरा संस्करण, 1983
2. तनेजा, जयदेव, हिंदी रंगकर्म. दशा और दिशा, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण,1998
3. अंकुर, देवेंद्रराज. रंगमंच का सौंदर्यशास्त्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2006
4. राकेश, मोहन.मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, 2003
5. ओक्षा, दशरथ. हिंदी नाटक, उद्भव और विकास, राजपाल एंड संस प्रकाशन, संस्करण, 2008
6. गार्गी, बलवंत. रंगमंच, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम हिंदी संस्करण, 1968
7. कुमार, सिद्धनाथ. नाटकालोचन के सिद्धांत, भावना प्रकाशन, संस्करण, 1998
8. कपिला वात्स्यायन. पारंपरिक भारतीय रंगमंच, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली, संस्करण, 2011
9. डॉ. अज्ञात. भारतीय रंगमंच का विवेचनात्मक इतिहास, पुस्तक संस्थान, कानपुर, प्रथम संस्करण, 1978
10. Varadpande, ML. *History of Indian Theatre*, Abhinav publications, Delhi,1987

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एम. ए. (हिंदी)

Structure 3 (Level 6.5) : Research

Semester II (For One Year PG)

Semester IV (For Two Year PG)

DSE2 कहानी और उपन्यास**:** शोध की संभावनाएं और समस्याएं

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSE2 **कहानी और उपन्यास: शोध की संभावनाएं और समस्याएं**	4	3	1	0	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (**Course Objectives**)**:**

- ➢ कथा साहित्य की सैद्धांतिकी और प्रविधियों का अध्ययन ।
- ➢ कहानी के क्षेत्र में शोध की नयी संभावनाओं की तलाश ।
- ➢ उपन्यास के क्षेत्र में शोध की नयी संभावनाओं की तलाश ।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम **(Course Learning Outcomes)**:

- ➢ ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक बदलावों की पहचान ।

- ➢ कथा साहित्य के क्षेत्र में विकसित नए क्षेत्रों की पहचान ।
- ➢ कथा साहित्य में नए प्रयोगों की पहचान ।

इकाई **1 :** सिद्धान्त**,** आलोचना और उपन्यास

(दास्तानगोई, यथार्थवाद और उपन्यास, व्यक्ति और उपन्यास, उपन्यास का समाजशास्त्र, राष्ट्रवाद और उपन्यास, इतिहास और उपन्यास, महाकाव्य और उपन्यास आदि सिद्धांतों/धारणाओं का पाठ के उदाहरण से अध्यापन)

इकाई**2 :** सिद्धांत**,** आलोचना और कहानी

(किस्सागोई की परंपरा, औपनिवेशिक दौर और कहानी, इतिहास, मिथक, संस्कृति और कहानी, व्यक्ति, समाज और कहानी, कहानी के बदलते आयाम, कहानी और लंबी कहानी, आदि बिन्दुओं का पाठ के उदाहरण से अध्यापन)

इकाई**3 :** ऐतिहासिक सामाजिक बदलाव और कथा साहित्य

(जासूसी कहानियाँ, औपनिवशिक दौर और उपन्यास, स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य, साठोत्तरी कथा साहित्य, भूमंडलीकरण और कथा साहित्य आदि बिन्दुओं पर आर्थिक-सामाजिक बदलावों की दृष्टि से पाठ के उदाहरण से अध्यापन)

इकाई**4 :** समकालीन विमर्श और कथा साहित्य

(आदिवासी, दलित, स्त्री और अन्य समकालीन विमर्शों पर पाठ के उदाहरण से अध्यापन)

संदर्भ ग्रंथ **:**

1. फाक्स, रैल्फ. नागर,(अनु.). नरोत्तम उपन्यास और लोक जीवन, पी.पी.एच, नयी दिल्ली, 2008 ।
2. यादव, राजेंद्र.उपन्यास *:* स्वरुप और संवेदना, वाणी प्रकाशन, सं. 2020 नयी दिल्ली ।
3. सिंह, नामवर (संपा). आधुनिक हिन्दी उपन्यास *1, 2* , राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2020 ।
4. पाण्डेय, मैनेजर.उपन्यास और लोकतंत्र–वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2018 ।
5. तिवारी, नित्यानंद.आधुनिक साहित्य और इतिहास बोध–वाणी प्रकाशन, दिल्ली,2009 ।
6. मदान, इन्द्रनाथ.आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास*,* राजकमल प्रकाशन, सं. 2025, दिल्ली ।
7. ब्युरैक, ए.एस. चतुर्वेदी, राममित्र(अनु.)., शुक्ल, रमेश चन्द्र (अनु*.).* उपन्यास-लेखन शिल्प, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादेमी, भोपाल ।
8. फार्स्टर, ई. एम., भार्गव, राजुला(अनु*.).,* उपन्यास के पक्ष, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादेमी, जयपुर ।
9. यादव, वीरेंद्र.उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता–राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2017 ।
10. तिवारी, विनोद (संपा.)उपन्यास *:* कला और सिद्धान्त *-1, 2,* अजय आनंद, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016 ।
11. Georg Lukacs, translated by Anna Bostock. *The Theory of the Novel* - The MIT Press, USA., 1977
12. James, Henry. *The Art of Fiction,* Partial Portraits (Macmillan).
13. James, Henry. *Selected Literary Criticism,* Morris Shapira (Edt.) – Penguin Books Ltd. England., 1987
14. Lubbock, Percy. *The Craft of Fiction* –Read A Classic, Jonathan Cape, London, 1963,U.S.A.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एम. ए. (हिंदी)

Structure 3 (Level 6.5) : Research
Semester II (For One Year PG)
Semester IV (For Two Year PG)

DSE:सिद्धांत और आलोचना**:** शोध की संभावनाएं और समस्याएं

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical / Practice		
DSE3 सिद्धांत और आलोचना: शोध की संभावनाएं और समस्याएं	**4**	**3**	**1**	**0**	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (**Course Objectives**)**:**

- ➢ विभिन्न साहित्यिक सिद्धांतों और आलोचना पद्धतियों की जानकारी प्रदान करना।
- ➢ संस्कृत और हिंदी आलोचना सिद्धांतों की समझ विकसित करना।
- ➢ पाश्चात्य शोध सैद्धान्तिकियों और हिंदी साहित्य में उनके प्रयोग की जानकारी देना।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम **(Course Learning Outcomes)**:

- ➢ संस्कृत और हिंदी आलोचना सिद्धांतों को जानेंगे।
- ➢ पाश्चात्य शोध सैद्धान्तिकियों और हिंदी आलोचना सैद्धान्तिकियों को जानेंगे।
- ➢ सिद्धांत, आलोचना, रचना के अंतर्संबंधों को जानेंगे।

इकाई **: 1** संस्कृत और हिंदी आलोचना**-** सिद्धांत**:** शोध की संभावनाएं
(हिंदी कविता, कथा साहित्य और अन्य विधाओं पर संस्कृत और हिंदी के काव्य शास्त्र का प्रभाव, हिंदी आलोचना पर काव्यशास्त्र का प्रभाव)

इकाई **: 2**पाश्चात्य काव्य चिंतन: शोध की संभावनाएं
(पाश्चात्य काव्य चिंतन का हिंदी साहित्य पर प्रभाव; शास्त्रवाद, स्वछंदतावाद और आधुनिकतावाद के विशेष संदर्भ में)

इकाई **: 3**साहित्यिक सिद्धांतिकी: शोध की संभावनाएं
(रूपवाद, कला कला के लिए, यथार्थवाद, मार्क्सवाद, नई समीक्षा, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, उत्तर औपनिवेशिकता के विशेष संदर्भ में)

इकाई **: 4**सिद्धांत, आलोचना और रचना का अंतर्संबंध

संदर्भ ग्रंथ**:**

1. कुमार, सुशील, संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास भाग-*1*, हिंदी बुक सेंटर, 1960
2. मीणा, रमेश चंद,आदिवासी विमर्श, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2021
3. मिश्र, जितेन्द्र नाथ, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विजय प्रकाशन मंदिर, 2023
4. नागेन्द्र, भारतीय काव्यशास्त्र, राजकमल प्रकाशन, 1952
5. पाण्डेय, रणजीत कुमार,संस्कृत काव्यशास्त्र और आचार्य वामन,. विजय प्रकाशन, 2021
6. पुष्पा, मैत्रेयी, अल्मा कबूतरी, वाणी प्रकाशन, 2000
7. वाल्मीकि, ओमप्रकाश, जूठन, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1997
8. शुक्ल, रामचन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, 1929 (पुनर्मुद्रण 2020).
9. सोबती, कृष्णा, मित्रो मरजानी, राजकमल प्रकाशन, 1966
10. सिंह, सुधा, ज्ञान का स्त्रीवादी पाठ, नॉट नल डॉट कॉम
11. AristotlePoetics, Translated by Malcolm Heath, Penguin Classics, 1996
12. Arya, Sunaina, and Aakash Singh Rathore, editors, Dalit Feminist Theory: A Reader, Routledge, 2019
13. Culler, Jonathan, Literary Theory: A Very Short Introduction, Oxford University Press, 1997
14. de Beauvoir, Simone, The Second Sex, Translated by Constance Borde and Sheila Malovany-Chevallier, Vintage, 2011
15. De, S. K, Sanskrit Poetics as a Study of Aesthetic, University of California Press, 1963
16. Eagleton, Terry, Literary Theory: An Introduction, Anniversary ed., Blackwell, 2008

17. Ingalls, Daniel H. H., translator and editor, An Anthology of Sanskrit Court Poetry: Vidyākara's "Subhāṣitaratnakoṣa" , Harvard University Press, 1965
18. Shahani, Parmesh, Queeristan: LGBTQ Inclusion in the Indian Workplace, Westland, 2020
19. Shekhar, Hansda Sowvendra, The Adivasi Will Not Dance, Speaking Tiger, 2015

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एम. ए.(हिंदी)

Structure 3 (Level 6.5) : Research
Semester II (For One Year PG)
Semester IV (For Two Year PG)

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSE अस्मितामूलक विमर्श : शोध की संभावनाएं और समस्याएं (आदिवासी, स्त्री एवं दलित)	4	3	1	0	स्नातक उत्तीर्ण	__

DSE:अस्मितामूलक विमर्श**:** शोध की संभावनाएं और समस्याएँ

पाठ्यक्रम के उद्देश्य **(Course Objectives)**

- अस्मिताओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान की समझ को विकसित करना।
- आदिवासी विमर्श की भूमिका, स्वर और सरोकारों का विश्लेषण करना।

➢ दलित साहित्य की पहचान और प्रतिरोध की चेतना की समझ विकसित करना ।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (**Course Learning Outcomes)**

➢विद्यार्थी अस्मिताओं का विश्लेषणात्मक ज्ञान की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

➢विद्यार्थी आदिवासी विमर्श साहित्य से परिचित होंगे।

➢विद्यार्थी दलित साहित्य की उपस्थिति के महत्व से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई **1**: अस्मिता की निर्मिति और इतिहास **(13** घंटे**)**

- अस्मिता की अवधारणा और सिद्धांत
- अस्मिता निर्माण की प्रकृति
- अस्मिता के प्रकार
- भूमंडलीकरण और अस्मिता

इकाई **2 :** शोध**-**क्षेत्र के रूप में दलित साहित्य **(11** घंटे**)**

- दलित विमर्श और साहित्य का स्वरूप
- दलित साहित्य का ऐतिहासिक आधार : अंबेडकरवाद
- दलित साहित्य के प्रमुख सरोकार और सामाजिक न्याय की स्थापना का संवैधानिक लक्ष्य
- दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र

इकाई 3 : शोध-क्षेत्र के रूप में स्त्री साहित्य (11 घंटे)

- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आदिवासी

सहायक ग्रंथ :

1. मुंडा, रामदयाल. आदिधर्म. पेंगुइन प्रकाशन वर्ष (मूल संस्करण 1937 या बाद में, हिन्दी संस्करण नव प्रकाशित)
2. नेगी, स्नेहलता. आदिवासी समाज और साहित्य, अनुज्ञा बुक्स प्रकाशन
3. शर्मा, ब्रह्मदेव. आदिवासी स्वशासन. प्रकाशन संस्थान, 1994
4. तिवारी, बजरंग बिहारी, दलित साहित्य एक अंतर्यात्रा (द्वि.सं. 2023, प्र. सं. 2015), नवारुण प्रकाशन, ग़ाजियाबाद।,
5. मीणा, गंगा सहाय. आदिवासी चिंतन की भूमिका. अनन्या प्रकाशन, 2016
6. गुप्ता, रमणिका. आदिवासी कौन. राधाकृष्ण प्रकाशन, 2016.
7. लिंबाले, शरणकुमार. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र. वाणी प्रकाशन, 2020.
8. वाल्मीकि, ओमप्रकाश. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र. राधाकृष्ण प्रकाशन, 2010.
9. चौहान, सुशीला टाकभौरे. दलित साहित्य की मुख्य धारा. वाणी प्रकाशन, 2011.
10. नैमिशराय, मोहनदास. दलित आंदोलन का इतिहास *(खंड 1-4*). राजकमल प्रकाशन, 2024.
11. चतुर्वेदी, जगदीश्वर, सिहं सुधा, लिंगभेद पितृसत्ता और स्त्रीवाद,एकैडमिक पब्लिकेशन, दिल्ली, 2021
12. अग्रवाल, रोहिणी, स्त्री लेखन स्वप्न और संकल्प, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 2025
13. तलवार, वीर भारत, उत्पीडित़ों के विमर्श, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2025
14. गिरि, राजीव रंजन, (सं.) स्त्री मुक्ति*:* यथार्थ और यूटोपीया, अनुज्ञा बुक्स प्रकाशन, दिल्ली 2023

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एम. ए. (हिंदी)

Structure 3 (Level 6.5) : Research
Semester II (For One Year PG)
Semester IV (For Two Year PG)
DSE: स्त्री चिंतन और अनुसंधान

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSE स्त्री चिंतन और अनुसंधान	4	3	1	0	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (**Course Objectives**):

- स्त्री चिंतन की भारतीय परंपरा से परिचित होना।
- स्त्री चिंतन और लेखन के क्षेत्र में भारतीय और यूरोपीय लेखन के संदर्भों को समझना।
- विभिन्न दार्शनिक/सामाजिक/ राजनीतिक परिस्थितियों और स्त्री लेखन के अंर्तसबंधों को समझना।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम **(Course Learning Outcomes):**

- विद्यार्थी स्त्री लेखन की सुदीर्घ भारतीय परंपरा से परिचित होंगे।
- वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतीय स्त्री लेखन की विशेषताओं को समझेंगे।

➢ दर्शन, संस्कृति, साहित्य, सामाजिक चिंतन और स्त्री लेखन के अंर्तसबंधों को समझेंगे।

इकाई **: 1प्राचीन काल और मध्यकाल में स्त्री की स्थिति और चिंतन की दिशाएँ** (11 घंटे)

- वैदिक और मिथकीय साहित्य में स्त्री
- परिवार संरचना का महत्व और स्त्री
- शिक्षा व्यवस्था में स्त्री जीवन
- एकल परिवार में स्त्री की स्थिति

इकाई **: 2** औपनिवेशिक दौर और **स्त्री चिंतन** (13 घंटे)

- बंगाल, महाराष्ट्र और हिंदी क्षेत्र का औपनिवेशिक स्त्री चिंतन
- यूरोपीय प्रभाव और स्त्री साहित्य
- सामाजिक क्रांति और स्त्री चिंतन की दिशाएँ
- आधुनिक परिवर्तन के रूप और साहित्यिक दृष्टि

इकाई **: 3 भारत का स्वतंत्रता संग्राम और स्त्री आंदोलन** (11 घंटे)

- स्वतंत्रता और स्त्री अधिकार
- भारत और यूरोप की आधुनिक महिला आंदोलनों का प्रभाव
- हिंदी का आरंभिक स्त्री चिंतन

इकाई **: 4 लोकतंत्र, स्त्री आंदोलन और स्त्री विमर्श**

(10घंटे)

- स्त्री के प्रति दार्शनिक दृष्टिकोण / स्त्री की सामाजिक स्थिति
- स्त्री आंदोलन और विमर्श की राजनीति
- लोकतंत्र में परिवार और स्त्री के विकास की चुनौतियाँ और दिशाएँ

सहायक ग्रंथ**:**

1. कपिला वात्स्यायन, मानव समाज, लोकभारती प्रकाशन, 2004
2. सांकृत्यायन,राहुल, वोल्गा से गंगा, किताब घर, 2018
3. एंगेल्स फ्रेडरिक, परिवार, राज्य और व्यक्तिगत जीवन का विकास, प्रकाशन संस्थान, 2014
4. शर्मा, ब्रह्मदेव, भारतीय समाज और यूरोपीय प्रभाव, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1996
5. सिंह, सुधा, हिंदी का आरंभिक स्त्री-चिंतन, एकैडमिक प्रकाशन, दिल्ली, 2025

6. Eunice De Souza, Lindsay Pereira, *Women's Voices*, OUP India, 2002

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

एम. ए. हिंदी

Structure 3 (Level 6.5) : Research

Semester II (For One Year PG)

Semester IV (For Two Year PG)

DSE 6:अनुवाद, जनसंचार एवं भाषाविज्ञान : शोध की संभावनाएं एवं समस्याएँ

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
DSE 6 अनुवाद, जनसंचार एवं भाषाविज्ञान : शोध की संभावनाएं एवं समस्याएँ	4	3	1	0	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य **(Course Objectives)**

➢ शोध-क्षेत्र के रूप में अनुवाद, जनसंचार और भाषाविज्ञान के विविध परिप्रेक्ष्य को उद्घाटित करना।

- ➢ अनुवाद, जनसंचार और भाषाविज्ञान में शोध की संभावनाओं को तलाशना।
- ➢ अनुवाद, जनसंचार और भाषाविज्ञान में शोध में आनेवाली समस्याओं से परिचित कराना।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (**Course Learning Outcomes)**

- ➢ विद्यार्थी शोध-क्षेत्र के रूप में अनुवाद, जनसंचार और भाषाविज्ञान के विविध परिप्रेक्ष्य को उद्घाटित कर सकेंगे।
- ➢ अनुवाद, जनसंचार और भाषाविज्ञान में शोध की संभावनाओं की तलाश करेंगे।
- ➢ अनुवाद, जनसंचार और भाषाविज्ञान में शोध में आनेवाली समस्याओं से परिचित होंगे।

इकाई **1 :** अनुवाद, जनसंचार एवं भाषाविज्ञान **:** अवधारणा और स्वरूप **(10** घंटे**)**

- अनुवाद का अर्थ एवं स्वरूप
- जनसंचार की अवधारणा
- भाषाविज्ञान की संकल्पना एवं क्षेत्र

इकाई **2 :** शोध क्षेत्र के रूप में अनुवाद **(11** घंटे**)**

- भारत का बहुभाषिक संदर्भ और अनुवाद
- भाषिक प्रयुक्ति और अनुवाद
- वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली का निर्माण और अनुप्रयोग
- अनुवाद का सांस्कृतिक संदर्भ

इकाई **3 :** जनसंचार में शोध का परिदृश्य **(11** घंटे**)**

- संचार शोध : अवधारणा, महत्व एवं प्रकार
- जनसंचार में शोध की विभिन्न दृष्टियाँ और शोध-प्रक्रिया
- जनसंचार में शोध के तकनीकी आयाम
- डिजिटल मीडिया : शोध की संभावनाएं एवं चुनौतियाँ

इकाई **4 :** भाषाविज्ञान में शोध का स्वरूप **(13** घंटे**)**

- भाषा एवं भाषाविज्ञान का अंतःसंबंध
- भाषाविज्ञान और व्याकरण का अंतःसंबंध
- संरचनावाद और आधुनिक भाषाविज्ञान
- साहित्य का भाषावैज्ञानिक अध्ययन

सहायक ग्रंथ :

1. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ.हिंदी भाषा का समाजशास्त्र. राधाकृष्ण प्रकाशन, 1994
2. तिवारी, भोलानाथ.आधुनिक भाषाविज्ञान. किताब महल, 1976
3. ब्लूमफील्ड, (लियोनार्ड ब्लूमफील्ड).भाषा *(Language)*. मूल संस्करण 1933
4. शर्मा, रामविलास.भाषा और समाज. राजकमल प्रकाशन, 1961/1977
5. शर्मा, रामविलास.ऐतिहासिक भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा. राजकमल प्रकाशन, 1981
6. शर्मा, राजमणि.आधुनिक भाषाविज्ञान. वाणी प्रकाशन, 2003
7. कुमार, सुरेश.अनुवाद विज्ञान की रूपरेखा
8. टंडन, डॉ. पूरनचंद, और डॉ. हरीश सेठी.अनुवाद के विविध आयाम
9. चतुर्वेदी, जगदीश्वर.जनमाध्यम*:* प्रौद्योगिकी और विचारधारा.
10. सिंह, सुधा. डिजिटल युग में मास कल्चर और विज्ञापन*,* अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली
11. शर्मा*,* कुमुद *,* विज्ञापन की दुनिया*,* प्रभात प्रकाशन

राष्ट्रीयशिक्षानीति **2020**

एम. ए. हिंदी

Structure 3 (Level 6.5): Research

SemesterII (For One Year PG)

SemesterIV (For Two Year PG)

SBC : शोध लेखन के उपकरण (टूल)

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Pre-requisite of the course (if any)	Content of Course and reference is in
		Lecture	Tutorial	Practical/ Practice		
SBC शोध लेखन के उपकरण (टूल)	2	1	0	1	स्नातक उत्तीर्ण	—

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (**Course Objectives**):

- ➢ विद्यार्थियों को शोध के उपकरणों से परिचित कराना ।
- ➢ शोध लेखन के लिए आवश्यक तकनीक से अवगत कराना ।
- ➢ शोध संहिता से परिचय प्राप्त करना ।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम **(Course Learning Outcomes)**:

- ➢ विद्यार्थी शोध के उपकरणों से परिचित हो सकेंगे।
- ➢ शोध के लेखन के लिए आवश्यक तकनीक से अवगत होंगे।

➢ शोध संहिता से परिचय प्राप्त करेंगे।

➢ इकाई **1**: ग्रंथसूची संग्रह और संदर्भ उपकरण (Bibliographic Archives and Referencing Tools)

➢ गूगल विद्वान, JSTOR, प्रोजेक्ट MUSE

- इंटरनेट आर्काइव, भारत के अभिलेखागार, पुस्तकालयों के डिजिटल संग्रह
- Zoetrope, Mendelay, End Note

इकाई**2 :** पाठ विश्लेषण, लेखन, साइटेशन और प्लैज़रिज्म जाँच के टूल्स

.Voyant Tool, AntConc

. व्याकरणिक (Grammarly), माइक्रसॉफ्ट वर्ड, लैटेक्स

. एम एल ए हैंड बुक, और एपीओ

. Turnitin, iThenticate

सहायक ग्रंथ **:**

1. सिन्हा एवं स्नातक, सावित्री एवं विजयेन्द्र.अनुसंधान की प्रक्रिया,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1960.
2. शर्मा, विनयमोहन.शोध प्रविधि, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1973.
3. सिंह, सरनाम.शोध प्रक्रिया एवं विवरणिका, आत्माराम एंड संस, नई दिल्ली, 1964.
4. त्रिपाठी, विनायक.शोध प्रविधि *:* अवधारणा एवं तकनीक, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली,2020.
5. गणेशन, एस. एन..अनुसंधान प्रविधि *:* सिद्धांत और प्रक्रिया, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश,2021.
6. सिंहल, बैजनाथ; शोध *:* स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2023.
7. राजूरकर एवं बोरा, भ.ह., एवं राजमल (संपादक), हिंदी अनुसंधान का स्वरूप, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली,1978.
8. सूरती, डॉ. उर्वशी जे; अनुसंधान का व्यावहारिक स्वरूप, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई, महाराष्ट्र, 1973.